भास के नाटक

कर्णभारम

संस्कृत मूल : महाकवि भास
भाषान्तर : भारतरत्न भार्गव

(आरम्भिक संगीत)

सूत्रधार एवं : नरसिंह रूप देखकर जिनका,
गायक दल देव, दैत्य, नर, नारी विस्मित।।
दैत्यराज का वक्ष चीर कर,
किया जगत का जन मन हर्षित।।
ऐसे हरि का हो जगवंदन,
हों आनंदित सब दर्शकगण।।

(मंगलाचरण के बाद नट का प्रवेश)

नट : भयंकर युद्ध हो गया आरम्भ।
महाराज दुर्योधन की आज्ञा से
सूचित करो अंगराज कर्ण को
सेनापति के रूप में प्रस्थान करें युद्ध स्थल की ओर।
(युद्ध सूचक संगीत, शंख, नगाड़े आदि के स्वर दोनों ओर से कुछ सैनिकों का प्रवेश। एक–दूसरे के दल पर आक्रमण करते हैं।)

नेपथ्य : तुमुल युद्ध आरम्भ, वीर जन शोभित,
अस्त्र, शस्त्र सज्जित, महिमा से मंडित,
युद्ध भूमि में खड़ग, बाण टकराते,
वार प्रहार तीक्ष्ण तम होते जाते !

दुर्योधन का दूत सूचना लाया,
अंगराज को युद्ध क्षेत्र बुलवाया।
जैसे गरजे सिंह, मृगों के दल पर,
वैसे कर्ण दौड़ कर आए सत्वर।

(दोनों ओर के सैनिकों द्वारा युद्ध का अभ्यास। कुछ सैनिक भाग जाते हैं तथा शेष सैनिक फ्रीज़ हो जाते हैं।)

(दृश्य परिवर्तन)

(रथ पर शल्य और कर्ण का प्रवेश।)

कर्ण : हे शल्यराज !

शल्य : कहिये अंगराज कर्ण !

कर्ण : आप केवल सारथी ही नहीं
संचालक भी हैं मेरी देह गति के।
युद्ध नीति में निपुण और मेरे हितैषी।
वहाँ चलें, अपना रथ लेकर
अर्जुन का रथ खड़ा जहाँ है।

शल्य : उचित है। मैं ले चलता उसी दिशा में रथ को।

(रथ आगे बढ़ता है। कर्ण अपने धनुष को उठाता है, किन्तु संभल नहीं पाता। वह फिर उठता है, किन्तु दुबारा शिथिल अंग होकर लड़खड़ा जाता है।)

नेपथ्य : जिसकी अतुलित शक्ति भयंकर
क्रोधित यम जैसा संत्रास
युद्ध भूमि में शत्रु पक्ष के
अश्व हस्ति का करता नाश!
वही कर्ण निस्तेज हुआ क्यों
दीन भाव से है आक्रान्त

खंडित है व्रत, शिथिल मनोरथ

अंगराज क्यों दुर्बल क्लान्त ?

कर्ण : अरे, हुआ क्या ?

दीनता का भाव क्यों मन में उपजता ?

क्यों शिथिल है तन ?

समर भूमि में आज क्यों निस्तेज है मन ?

शल्य : अंगराज, क्या हुआ ?

कर्ण : ओह अर्जुन के वध के विचार ने

याद दिलाई मुझको

माता कुंती को दिए गए वचनों की।

शल्य : अंगराज, कौन सा वचन दिया था आपने ?

कर्ण : जानना चाहते क्या आप ?

शल्य : हाँ अंग नरेश, संभव है कर्त्तव्य सुनिश्चित कर पाऊं मैं

सत्य जानने के पश्चात।

कर्ण : सुनो शल्यराज,

युद्ध आरम्भ होने की पूर्व संध्या को

माता कुंती आई मेरे सैन्य शिविर में।

शल्य : अच्छा !

कर्ण : समर भूमि में उन्हें देखकर चकित रह गया।

वे थीं अकेली।

(फ़ेड आउट। फ्लैश बैक। हल्का नीला प्रकाश। कर्ण अपने धनुष की प्रत्यंचा देख रहे हैं। कुंती का प्रवेश।)

कर्ण : **(आश्चर्य से)** राजमाता कुंती, आप ?

कुंती : हाँ पुत्र! किंतु राजमाता नहीं, तुम्हारी माता कुंती।

कर्ण : निस्संदेह, आप हैं मेरी माता के समान ही।

आदेश दें, क्या कर सकता हूं मैं आपके हित में ?

कुंती : पुत्र कर्ण, मांगने आई हूँ तुमसे भिक्षा।
याचना करती हूँ मैं।

कर्ण : पुत्र कहा है मुझे आपने,
इसलिए मैं शत्रु पक्ष के जीवन के अतिरिक्त
सब कुछ देने को हूँ तत्पर,
मुझको दें आदेश।

कुंती : पुत्र कर्ण, मैं चाहती तुम करो अपने सहोदरों के प्राणों की रक्षा।
यही वचन दो।

कर्ण : सहोदर मेरे ? राजमाता कुंती, मुझको जन्म दिया राधा ने
इसीलिए राधेय सभी जन कहते मुझको।
नहीं जानता, मेरा कोई सहोदर भी है।

कुंती : वत्स, पालन–पोषण किया तुम्हारा राधा ने ही
किन्तु जन्म तुम्हारा नहीं हुआ उदर से उनके।

कर्ण : ये क्या कह रही हैं आप ?

कुंती : हां, तुम्हारा जन्म हुआ मेरे उदर से।
जननी हूँ मैं तुम्हारी।
मेरे तीनों पुत्र सहोदर हैं तुम्हारे।

कर्ण : **(हंसते हुए)** वाह ! अद्‌भुत युक्ति खोज निकाली
मेरे परम शत्रुओं के प्राण बचाने हेतु। **(ज़ोर से हंसता है।)**

कुंती : **(विनय पूर्वक)** नहीं, नहीं। यह युक्ति नहीं है।
परम सत्य है।
मैं हूँ जननी तुम्हारी और तुम्हारे हैं सहोदर तीनों पांडव।

कर्ण : क्या कहती हैं ? सत्य है ये ?
नहीं, नहीं, ये सत्य नहीं हो सकता।
(वह विचलित सा इधर–उधर देखता है। कुंती की आँखों में झांकता है। वह निर्विकार है। अन्तर्मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए)

ओह कैसा कष्ट है ?
यह अभिशाप भोगने को ही धरती पर उतरा था,
मुझको जन्म दिया ही क्योंकर ?
मैंने क्यों यह जीवन पाया ?

कुंती : इन प्रश्नों का उत्तर लेकर ही आई हूँ पुत्र।

कर्ण : संभव हैं क्या, इन तीखे प्रश्नों के उत्तर ?
ऐसी जननी जिसने जन्म दिया बेटे को,
उसे त्याग दे, जीवन भर तक, दलित और पीड़ित का जीवन
जीने को अभिशापित कर दे।
क्या यह संभव है, हो ऐसी जननी
जो अपने ही बेटे को अग्निदाह में स्वयं झोंक दे।
मुझे बताओ, क्या कारण था
मैंने क्या अपराध किया था ?
क्योंकर मुझको त्यागा, मेरी माँ होकर।
ओह, कैसी विडम्बना है ?

कुंती : पुत्र, मैं स्वीकारती अपराध अपना
फिर भी यह है सत्य, विवशता थी यह मेरी
सुनो, धैर्य से एक विवश जननी की पीड़ा।

कर्ण : मैं उत्सुक हूँ।

कुंती : विवाह पूर्व, जब मैं अपने पिता के पास
महाराज भोज के आश्रय में थी,
तभी एक दिन दुर्वासा ऋषि राजभवन में आए।
उनके स्वागत का दायित्व मुझे दिया था,
मेरे जनक पिता ने मुझको,
यथाशक्ति सेवा की मैंने उन ऋषिवर की।
मेरी सेवा से प्रसन्न थे वे

दिया उन्होंने एक मंत्र मुझको
फिर बोले,
इसके द्वारा मैं मनचाहे देवों का आवाह्न करके
पुत्र प्राप्ति की इच्छा कर सकती हूँ पूरी।

कर्ण : किंतु इस कथा का सम्बन्ध क्या मेरे जीवन से ?

कुंती : बता रही हूँ वही।
दुर्वासा की कृपा
शाप बन टूटी मुझ पर
उसी ताप से मैं झुलसी पूरे जीवन भर।

कर्ण : कृपा बन गई शाप कैसे ?

कुंती : एक दिवस जब मैंने इसी महामंत्र के द्वारा
सूर्य देव का आवाह्न कर डाला।
मन में केवल थी जिज्ञासा
मंत्र शक्ति से देव प्रकट क्या होंगे भू पर
सूर्य देव का आवाह्न जब किया
प्रकट हो गए देवता
थी आह्लादित और चकित भी
(दो अभिनेता रंगपटी लेकर आते हैं, उसके पीछे सूर्य प्रकट होते हैं।)

कुंती : **(आश्चर्य से)** आप ? सूर्य देवता ?

सूर्य : हाँ मैं !
मंत्र शक्ति से आवाह्न किया
हुआ उपस्थित उसके कारण
तुमने चाहा करूँ समागम तुमसे

कुंती : **(घबरा कर)** नहीं, नहीं, यह चाह नहीं है।

सूर्य : तो फिर आवाह्न क्यों किया ?

कुंती : जिज्ञासा वश मैंने करी परीक्षा,

मंत्र शक्ति की !
केवल इतनी रही चाह थी,
मंत्र शक्ति के प्रभाव की सत्यता का पता लगा लूँ
करती हूँ प्रणाम !
अब आप करें प्रस्थान।

सूर्य : देवि, यह सम्भव नहीं है।
तेजस्वी ऋषि हैं दुर्वासा,
उनकी मंत्र शक्ति का मैं करूँ निरादर,
नहीं यह सम्भव !
मंत्र बिद्ध मैं
करना होगा पालन मुझको
उनका यह आदेश।
आओ, प्रस्तुत हो।

(सूर्य कुंती की ओर बढ़ता है।) **(क्रमशः)**